3. विसर्ग संधि

परिभाषा–विसर्ग के पश्चात् स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में जो परिवर्तन आता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

नियम–

(क) विसर्ग का 'ओ'

विसर्ग से पूर्व यदि 'अ' हो और बाद में अ या किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण या य्, र्, ल्, व्, ह् हो तो विसर्ग (:) का रूपांतरण 'ओ' में हो जाता है। *जैसे–*

अधः + गति	=	अधोगति	मनः + अनुकूल	=	मनोनुकूल
मनः + बल	=	मनोबल	मनः + रथ	=	मनोरथ
मनः + विकार	=	मनोविकार	मनः + विनोद	=	मनोविनोद
मनः + योग	=	मनोयोग	मनः + हर	=	मनोहर
तेजः + मय	=	तेजोमय	पयः + द	=	पयोद
रजः + गुण	=	रजोगुण	तमः + गुण	=	तमोगुण
तपः + बल	=	तपोबल	यशः + दा	=	यशोदा
वयः + वृद्ध	=	वयोवृद्ध	मनः + भाव	=	मनोभाव
तपः + वन	=	तपोवन	पयः + धर	=	पयोधर

(ख) विसर्ग का 'र्'

विसर्ग से पहले अ या आ से भिन्न कोई स्वर हो और बाद में कोई स्वर, किसी वर्ग का **तीसरा, चौथा, पाँचवाँ** अक्षर या **य, ल, व** में से कोई वर्ण हो, तो विसर्ग का **र्** हो जाता है। *जैसे–*

निः + अर्थक	=	निरर्थक	दुः + आशा	=	दुराशा
निः + धन	=	निर्धन	निः + उत्साह	=	निरुत्साह
निः + मल	=	निर्मल	दुः + उपयोग	=	दुरुपयोग
दुः + गुण	=	दुर्गुण	निः + जन	=	निर्जन
दुः + बल	=	दुर्बल	पुनः + जन्म	=	पुनर्जन्म
दुः + जन	=	दुर्जन	निः + भय	=	निर्भय
दुः + आचार	=	दुराचार	निः + आहार	=	निराहार
आशीः + वाद	=	आशीर्वाद	निः + बल	=	निर्बल
निः + उपम	=	निरुपम	निः + आमिष	=	निरामिष
दुः + बुद्धि	=	दुर्बुद्धि	निः + विघ्न	=	निर्विघ्न
बहिः + मुख	=	बहिर्मुख	पुनः + जन्म	=	पुनर्जन्म
निः + आशा	=	निराशा	निः + उत्तर	=	निरुत्तर
निः + लिप्त	=	निर्लिप्त	निः + विकार	=	निर्विकार
निः + यात	=	निर्यात	निः + लोभ	=	निर्लोभ

(ग) विसर्ग का 'श्'

विसर्ग से पहले यदि कोई स्वर हो और परे (बाद में) **च, छ** या **श** हो तो विसर्ग का **श** हो जाता है। *जैसे–*

निः + चय	=	निश्चय	दुः + चरित्र	=	दुश्चरित्र

Scanned by CamScanner

नि: + चल = निश्चल
नि: + चिंत = निश्चिंत
नि: + छल = निश्छल

दु: + शासन = दुश्शासन
दु: + चक्र = दुश्चक्र
हरि: + चंद्र = हरिश्चंद्र

(घ) विसर्ग का 'स्'

विसर्ग के परे यदि **त्** या **स्** हो तो विसर्ग का स् हो जाता है। *जैसे–*

दु: + तर = दुस्तर
नि: + तेज = निस्तेज
नि: + तार = निस्तार
मन: + ताप = मनस्ताप
नम: + ते = नमस्ते
नि: + संदेह = निस्संदेह, नि:संदेह

दु: + साहस = दुस्साहस
दु: + सह = दुस्सह
नि: + संग = निस्संग
नि: + संकोच = निस्संकोच
नि: + संतान = निस्संतान

(ङ) विसर्ग का 'ष्'

यदि विसर्ग से पूर्व **इ** या **उ** हो और विसर्ग से परे **क्, ख्, ट्, ठ्, प्, फ्** में से कोई वर्ण हो, तो विसर्ग क ष् हो जाता है। *जैसे–*

दु: + कर्म = दुष्कर्म
नि: + काम = निष्काम
धनु: + टंकार = धनुष्टंकार
नि: + कपट = निष्कपट
नि: + कलंक = निष्कलंक
दु: + प्रकृति = दुष्प्रकृति
नि: + पक्ष = निष्पक्ष

चतु: + पाद = चतुष्पाद
दु: + परिणाम = दुष्परिणाम
नि: + पाप = निष्पाप
नि: + फल = निष्फल
नि: + ठुर = निष्ठुर
दु: + कर = दुष्कर

(च) विसर्ग का लोप (छिप जाना) और पूर्व स्वर (पहले आने वाले स्वर) का दीर्घ हो जाना।

(*i*) **विसर्ग का लोप**–यदि विसर्ग से पहले **अ** या **आ** हो और विसर्ग के बाद कोई भिन्न स्वर हो तो विस का लोप हो जाता है। *जैसे–*

अत: + एव = अतएव

(*ii*) **पूर्व स्वर दीर्घ और विसर्ग का लोप**–यदि विसर्ग के आगे **र्** हो तो विसर्ग लुप्त हो जाता है और विसर्ग का पूर्व स्वर दीर्घ हो जाता है। *जैसे–*

नि: + रोग = नीरोग
नि: + रज = नीरज

नि: + रस = नीरस

(छ) विसर्ग से पहले 'अ' हो और विसर्ग से परे क् या प् हो तो विसर्ग में परिवर्तन नहीं होता है। जैसे–

अंत: + करण = अंत:करण
प्रात: + काल = प्रात:काल

पय: + पान = पय:पान
अध: + पतन = अध:पतन

Scanned by CamScanner